हिन्दी विभाग

आरजू

आरजू है तुम्हे दूर से देखने की,
पर पास आना नही चाहते।
तमन्ना नही तुम्हे पाने की,
मगर खोना भी नही चाहते।
आँखों की जुबान वह समझ नही पाती,
हम मगर कुछ कह नही पाते।
अपनी बेबसी किस तरह कहे,
कोई है जिसके बिना हम रह नही पाते।
इस छोटे से दिल में, गम बहुत है,
जिंदगी में मिलते हर पल जख्म बहुत है।
मार डालती कब की ये दुनिया,
कमबक्त दोस्तों की दुवाओं में दम बहुत हैं।
गम से हाथ न मिलाते तो क्या करते,
आँसुओं को गम न लगाते तो क्या करते?
दोस्त ने माँगी थी रोश्नी की दुआ,
हम अपने घर को न जलाते तो क्या करते?
हर दुआ कबूल नही होती,
हर आरजू पूरी नही होती।
जिनके दिल में आप जैसा दोस्त हो,
उनके लिए धड़कन भी जरूरी नही होती।
सुरज डूबा मध्यम चाँद भी चलने लगा,
मैं ठहरा रहा, जमीन चलने लगा।
सजना क्या रे मेरा पहला पहला प्यार है,
उल्लू से प्यार नही, भूकंप है भाग रे।
आप से दूर भला हम कैसे रह पाते,
दिल से आपको कैसे भुला पाते।
काश! कि आप सांसो के अलावा आइने में भी वैसे होते,
खुद को भी देखते तो आप नजर आते।
अपनी जिंदगी में मुझे शरीक समझना,
कोई गए आए तो करीब समझना।
दे देंगे मुस्कुराहट आँसुओ के बदले,
मगर हजारो दोस्तो में थोड़ा अजीज समझना।

अमीत कुमार पान्डे
स/ओ के. पान्डे
ओ. पी. एस एक्जीक्यूटिव
रांची

पैरोडी

शादी शुदा यारों का वो रोना रूलाना याद हैं

चुपके-चुपके रात दिन उसका मुझसे बरतन मंजवाना याद है।
हमको अब तक कपडें धोनें का वो जमाना याद हैं।।

दोपहर की धूप में कपडें सुखाने के लियें।
वो मेरा कोठी पे नंगे पॉव भी जाना याद हैं।।

आ गया जब सन्डें की शब भी कभी जिक्रे शॉपिंग।
वो मेरा बीबी से मेरा ए0टी0यम0 कार्ड छुपाना याद हैं।।

सास ससुर की दोस्तों अब क्या सुनाउ दास्तां।
ससुराल न जाने का मुझे हर इक बहाना याद है।।

दारू पी के जब भी घर में आना पड़ा मुझें।
वो मेरा दाँतों तले इलाइची चबाना याद हैं।।

देख लिया जब भी कभी रास्तें में किसी दूसरी लडकी को।
बीबी के गुस्से को देख कर मेरा थरथराना याद हैं।।

वक्ते रूखसत ऑफिस अब भी याद आता हैं मुझें।
बीबी के पर्स से कार की चाबी चुराना याद हैं।।

सेकेन्ड शो देखकर मेरा वो रात को देर से घर आना।
बीबी का गुस्से से मेरे लिये दरवाजा न खोलना याद है।।

जब कभी इत्तफाकन तवे पे रोटी जल जाने पर।
वो मेरा तेरे बेलन से सिर फुडवाना याद हैं।।

जब कभी तुझसे तेरी उमर पूछने पर वो तेरा दुप्पटे में।
शरमाना और ३४ को १७ बताते हुये मुस्कराना याद हैं।।

अपनी उमर छुपाने को वो तेरा मुन्ने को पीटना।
और तुझे मम्मी नही दीदी बुलाने को कहलवाना याद हैं।।

हप्ते बाद ही तेरा मुँह उठा कर मायके चला जाना तेरा।
और मेंरा घर में अकेले झाडू पोंछा लगाना याद हैं।।

खींच लेना वो तेरा सेलरी का लिफाफा दफत्तन।
और तेरा ब्यूटी पार्लर पे वो पैसे उड़ाना याद हैं।।

याद हैं बेगम अब भी वो तेरा बेलन से पीटना मुझे।
और बाद पीटने के तेरा मरहम लगाना याद हैं।।

आये दिन साले-सालियों का आना घर पे मेरे।
वो तेरा उनके सामने मुझे मुरगा बनाना याद हैं।।

शुक्र हैं भाइयों अभी शादी नही हुयी हैं तेरी।
शादी शुदा यारों का वो रोना रूलाना याद हैं।।

प्रेषक :- प्रवीन विश्वकर्म
ऑफिस एक्जीक्यूटिव
कानपुर।